कृषि किरण अंक-11, जून 2021: पृष्ठ: 47-51
http://saaer.org.in

बकरीपालन एक लाभकारी व्यवसाय

सुरेश चन्द कांटवा, सुपर्ण सिंह शेखावत, रामप्रताप, योगेन्द्र कुमार मीणा और रेनु कुमारी गुप्ता
कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटपुतली, जयपुर, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर

बकरी देश के प्रत्येक क्षेत्र एवं जलवायु में पायी जाती है। बकरीपालन देश में असंख्य, गरीब, भूमिहीन व मजदूर लोगों की रोजी-रोटी का मुख्य स्त्रोत है। इसकी महत्ता देश के कुछ विषेश क्षेत्र जैसे राजस्थान का मरूस्थलीय एवं पर्वतीय क्षेत्रों में और बढ़ जाती है क्योंकि वर्षा की कमी व अनिष्चितता

के कारण राजस्थान के मरूस्थल में फसल उत्पादन सफल व्यवसाय नहीं है व पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि क्रियाएँ अत्यन्त कठिन है।बकरी पालन व्यवसाय सबसे प्राचीनतम व्यवसायों में से एक है। इसमें थोडी सी पूंजी लगाकर व्यवसाय किया जा सकता है तथा अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। इस व्यवसाय को करने में अधिक संसाधनों तथा जमीन की आवष्यकता नही होती है। क्योकि बकरी छोटे शारीरिक आकार, अधिक प्रजनन क्षमता तथा चरने में कुषल पशु होने के कारण इसे पालना सरल है। आज के आधुनिक परिवेश में इसे लाभप्रद व्यवसायों में बनाने के लिए अच्छी नस्लें जलवायु के अनुरूप विकसित की गई हैं। इस व्यवसाय को सुचारू रूप से करने के लिए निम्न बातों को ध्यान रखना अनिवार्य है।

1) अच्छी नस्ल का चयन
2) पोषण
3) प्रजनन
4) स्वास्थ प्रबन्धन

अच्छी नस्ल का चयन:- इसमें जलवायु तथा आकार के अनुरूप बकरा/बकरियों का चयन आवश्यक है।

बडे आकार की नस्लें:- जमुनापारी, बीट्ल, मकराना

मध्यम आकार की नस्लें:- सिरोही, मारवाडी, मैहसाना।

छोटे आकार की नस्लें:- बरबरी, ब्लैक बंगाल।

जमुनापारी, सिरोही तथा बरबरीनस्ल की बकरियां मैदानी क्षेत्रों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। इन नस्लों का संवर्धन तथा वृद्धि एवं व्यवसाय हेतु अधिकाधिक रूप से उपयोग पशुपालको द्वारा किया जा सकता है। व्यवसाय को प्रारम्भ करते समय उपयुक्त प्रजनन क्षमता युक्त वयस्क स्वस्थ्य बकरियों को ही क्रय करना चाहिए।

पोषण आवश्यकता

बकरीपालक के लिए बकरियों की विभिन्न शारीरिक अवस्थाओं में उनकी पोषण आवश्यकतायें अलग-अलग होती है। बकरी चरने वाला पशु है। स्थानीय रूप से विकसित चारागाह/पेड पौधा/कृषि फसलों की उपलब्धता अच्छे हरे चारे के रूप में आवश्यक हैं। बकरी को यदि 8 घण्टे चराने पर पाला जाता है तो उसके शारीरिक भार का 1 प्रतिशत पौष्टिक आहार के रूप में खाने हेतु दिया जाये। उदाहरणार्थ 25 किग्रा. शारीरिक भार पर 250 ग्राम पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है।

शुष्क बकरियाँ- इन बकरियों को प्रतिदिन लगभग 500 ग्राम दलहनी या 1.0 किलोग्राम अदलहनी हरा चारा, 500-600 ग्राम दलहनी भूसा तथा लगभग 100 ग्राम दाना मिश्रण की अवश्यकता होती है।

दूध देने वाली बकरियाँ- दूध देने वाली बकरियों को दलहनी हरा चारा कम से कम एक किलोग्राम प्रति बकरी प्रतिदिन के हिसाब से दे। इसके अतिरिक्त प्रति किलो दूध उत्पादन के लिए 200-250 ग्राम दाना प्रति बकरी प्रतिदिन देना चाहिए।

गर्भित बकरियाँ- गर्भित बकरियों को ब्याने से लगभग 45 दिन शेष रहने के समय से

प्रतिदिन 300-400 ग्राम अतिरिक्त दाने की आवश्यकता होती है।

बीजू बकरों का पोषण- प्रजनन के लिए प्रयोग में लाये जाने की स्थिति में सामान्य पोषण (हरा चारा, दलहनी भूसा एवं 200-250 ग्राम दाना मिश्रण) के अतिरिक्त 400-500 ग्राम

दाना मिश्रण प्रति बकरा प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाना चाहिए। दाना मिश्रण में 1 प्रतिशत नमक एवं 1.5 प्रतिशत खनिज लवण मिलाना आवश्यक है।

बकरियों के आहर के मुख्य स्रोत निम्न हैं -

- अनाज वाली फसलों से प्राप्त चारे।
- दलहनी फसलों से प्राप्त चारे।
- पेड पौधों की फलियाँ व पत्तियाँ।
- विभिन्न प्रकार की घास व झाडियाँ।
- दाने व पशु आहार।

संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार आहार व चुगान बकरियों को बांध कर भी उपलब्ध कराया जा सकता है। चारागाह की कमी हो जाने की वजह से आवास में रखकर पालने वाली पद्वति अधिक लाभप्रद होती जा रही है। अच्छे आवास हेतु 12 से 15 वर्ग फीट स्थान प्रति पशु आवश्यक है। आवास में हवा व प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए। आवास स्थानीय उपलब्ध संसाधनों में सस्ता निर्मित होना चाहिए। बांध कर पालने वाली पद्वति में प्रति पशु 1 - 2 किग्रा. भूसा या 2.5 किग्रा. हरा चारा/पत्तियाँ/हे/साईलेज तथा 500 ग्राम से 1 किग्रा. संकेन्द्रित आहार शारीरिक आकार के अनुसार दिया जाना चाहिए।

प्रजनन:

बकरियों में प्रौढ़ आयु लगभग 10-12 माह में आ जाती है, लेकिन बकरियों में

परिपक्वता होने की आयु नस्ल के शरीर आकार पर निर्भर करती है। बड़े आकार वाली बकरियों में प्रौढ़ावस्था सामान्यतः 10-12 माह में, मध्यम आकार वाली बकरियों में 8-10 माह में और छोटे आकार वाली बकरियों में 6-8 महीने पर आ जाती है। लेकिन इनको

इनकी प्रौढ़ावस्था से लगभग दो माह बाद गर्भित कराना उचित रहता है क्योंकि इस समय तक इनका जननतंत्र पूर्ण रूप से

विकसित हो जाता है तथा शारीरिक भार में वृद्धि होकर मजबूती आ जाती है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि कम शरीर भार वाली बकरी से प्राप्त बच्चों का जन्म भार कम होता है और उनमें मृत्यु दर बढ़ जाती है। कम आयु व कम शरीर भार वाली बकरियाँ को गर्भित कराने पर उनमें असामान्य जनन की संभावनायें बढ़ जाती है। इसलिए बकरी पालक को अपनी बकरी को उचित आयु व शरीर भार प्राप्त करने के बाद ही गर्भित कराना चाहिए जिससे वे स्वस्थ बच्चे को जन्म दे सके।

मदकाल एवं मदचक्र

बकरियों में गर्मी में आने के समय को मदकाल एवं बकरी के गर्भित न होने पर पुनः गर्मी में आने के अन्तराल को मदचक्र कहते है। बकरियों में मदकाल की अवधि लगभग 12-36 घंटे एवं मदचक्र की अवधि 18-21 दिन होती है। रेवड में नर के साथ-साथ रहने वाली मादा में यौन परिपक्वता जल्दी आ जाती है, साथ ही उसका यौन व्यवहार कम उम्र में भी परिलक्षित होने लगता है। इसके विपरीत नर से दूर रखकर पालन करने पर मादा का आकर्षण नर के प्रति अत्याधिक होता है। अत जनन के अच्छे परिणाम हेतु मादा को नर से अलग रखकर पालन करना अच्छा रहता है। आवश्यक है कि उसे बकरी के गर्मी में होने के लक्षणों की पूर्ण जानकारी हो, जिससे वह उसे उचित समय पर गर्भित करा दें। रेवड़ में गर्मी में आयी बकरी की पहचान बधिया बकरे या जननांग पर कपड़ा बंधे बकरे से की जा सकती है। लेकिन ध्यान रहे कि जिस बकरे से बकरी के गर्मी में होने की पहचान की थी, उससे बकरी को गर्भित नही करना चाहिए।

उत्पादन आयु

सामान्यतः बकरियों की जीवन उत्पादन आयु 10-12 वर्ष की होती है लेकिन उनकी अधिकतम उत्पादन क्षमता 4-6 वर्ष की आयु के मध्य पायी जाती है। अतः रेवड़ में 7 वर्ष से अधिक उम्र की मादाओं को नही रखना चाहिए। ऐसा करने पर रेवड़ का औसत उत्पादन एवं जनन स्तर घट जाता है। इसलिए बकरीपालकों के लिए आवश्यक है कि वह अपने रेवड़ से अधिक आयु की सभी मादा बकरियों का उचित माध्यम से निस्तारण करके उनके स्थान पर कम उम्र की बकरियां रखे जिससे तुलनात्मक अधिक उत्पादन मिलता रहे

स्वास्थ्य प्रबन्धन:- बकरी के बच्चों में डायरिया, न्यूमोनिया, इंटेराइटिस से बचाव हेतु उचित देखभाल करनी चाहिए। वयस्कों में

परजीवी रोगों के विरूद्व नियमित कृमिनाशक (पटार) की दवा पिलानी चाहिए। संक्रामक रोग गलघोटू, इटरोटाक्सीमिया, मुंहपका खुरपका तथा पी. पी. आर. रोगों के विरूद्व समय - समय पर टीकाकरण कराना आवश्यक होता है।

अन्तः प्रजनन से बचाव

सम्बन्धियों के आपस में प्रजनन को अन्तः प्रजनन कहते है। रेवड़ में अन्तः प्रजनन को रोकना आवश्यक है क्योंकि इससे बकरियों के उत्पादन एवं अन्य गुणों में गिरावट आ जाती है। इससे रेवड़ में उत्पादन दोष पैदा हो जाता है जिससे लगभग सभी गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः प्रजनन को कम करने के लिए रेवड़ में बीजू बकरा प्रयोग करते समय ध्यान देना चाहिए कि कहीं इसका प्रयोग इसके रक्त सम्बन्धियों के साथ तो नहीं किया जा रहा है। रेवड़ में बीजू बकरे के नजदीक के संबंधी उसकी माँ, बहिन, पूत्री व चचेरी बहिन आदि हो सकते है। रेवड़ में अन्तः प्रजनन की स्थिति आने पर बकरीपालक को चाहिए कि वह दूर के रेवड़ से बीजू बकरा खरीद या मांग कर अपने रेवड़ की मादाओं से प्रजनन करायें। ऐसा करने से रेवड़ में नर व मादा का खून बदल जायेगा और रेवड़ में उत्पादन स्तर सुधर जायेगा। रेवड़ में बीजू बकरे को लगातार 2-3 वर्ष से अधिक प्रयोग नही करना चाहिए। ऐसे सभी बकरे जो प्रजनन में प्रयोग नही करते है उन्है 3 महीने की आयु तक बधिया कर उचित शरीर भार प्राप्त होने पर बेच देना चाहिए। बधिया करने से उनमें बढ़वार अधिक होती है तथा उनसे प्राप्त मांस अच्छी गुणवत्ता का होता है।

बकरियों की छंटनी

रेवड़ में समय-समय पर अवांछित जानवरों की छंटनी कर निस्तारण करना भी आवश्यक क्रिया है। बकरियों में छंटनी करने के अनेक आधार हो सकते है जैसे - जानवर में शुद्ध नस्ल के गुण न होना, रेवड़ के औसत से कम शरीर भार व दुग्ध उत्पादन होना, एक मेमना पैदा करने वाली मादा का होना, दो ब्यांतों में ज्यादा अन्तराल होना, जल्दी-जल्दी बीमार होना आदि। छंटनी करने से रेवड़ में नस्ल की शुद्धता बनी रहती है व कम उत्पादक पशुओं द्वारा खाये गये चारे-दाने का उपयोग उत्पादक जानवरों द्वारा कर लिया जाता है।